SEMESTER – III

(Social and Political dynamics of Democracy)

CC – 07

CONTEMPORARY INDIA

(2019 - 2021)

E-Content IV

- Unit – III : Topic
  - A. Veer kunwar Singh.

Vetted by :

प्रो0 (डॉ0) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9835463960

डॉ0 विद्यानंद विधाता

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9472084115

1857 के विद्रोह में वीर कुँवर सिंह की भूमिका

सन् 1857 की क्रांति के महानायक वीर कुंवर सिंह भारतीय इतिहास के उन थोड़े से चिरस्मरणीय व्यक्तियों में से एक हैं, जिन्होंने अपनी मातृभूमि के लिए हँसते–हँसते प्राण न्योछावर किये। वे एक ऐसे वीर सेनानी थे जिन्होंने जन भावनाओं का सम्मान करते हुए अपराजेय माने जाने वाले अंग्रेजों के विरूद्ध तलवार उठायी और उन्हें बार–बार पराजित किया। निश्चित रूप से आज वे एक क्रांतिवीर के रूप में जनमानस में जीवित हैं। उनका त्याग, संघर्ष और बलिदान आनेवाली पीढ़ियों को अपने देश और समाज के लिए हमेशा कुछ करने की प्रेरणा देता रहेगा।

वीर कुंवर सिंह जगदीशपुर रियासत के शासक थे, जिसकी स्थापना 1702 ई0 में डुमरॉव राज के संस्थापक राजा रामनारायण के पुत्र प्रबल शाही के छोटे पुत्र सुजान सिंह द्वारा की गयी थी। सुजान सिंह के पुत्र उदवन्त सिंह थे जो इस रियासत के अत्यन्त लोकप्रिय शासक हुए। उनके ही वंश में आगे चलकर शाहबजादा सिंह शासन बने। शाहबजादा सिंह की मृत्यु 1826 ई0 में हुई। वीर कुंवर सिंह उनके पुत्र थे। उनका जन्म 23 अप्रैल, 1777 ई0 में हुआ था।

वीर कुंवर सिंह 1857 ई0 के विद्रोह के सबसे बड़े योद्धा के रूप में उभरे। फ्रेडरिक ऐंग्लिस ने उनके एवं उनके छोटे भाई अमर सिंह की छापामार युद्ध की मुक्त कंठ से प्रशंसा की हैं। निश्चित तौर पर बिना जन समर्थन के छापामार युद्ध नहीं लड़ा जा सकता है। इस विद्रोह में व्यापक जन सहभागिता थी। लेफ्टिनेन्ट जनरल एस0 के0 सिन्हा के अनुसार अवध और पश्चिम बिहार क्षेत्र में यह आम लोगों की लड़ाई बन गई थी। और इस

आम लड़ाई के सिपहसलार के रूप में वीर कुंवर सिंह एवं उनके भाई अमर सिंह उभरे।

बिहार में 1857 ई0 का विद्रोह 12 जून, 1857 को देवघर जिला के रोहिणी नामक गांव (सम्प्रति झारखंड) में देशी सैनिकों द्वारा अंग्रेजी शासन के विरूद्ध वगाबत का झंडा बुलन्द करने के प्रयास में शुरू किया गया। उसे तत्काल कुचल दिया गया। रोहिणी दानापुर सैनिक मुख्यालय का एक केंद्र था। स्वाभाविक रूप से इस बगावत की अनुगूंज दानापुर तक सुनाई पड़ी। दानापुर से सटा पटना शहर वहाबी आन्दोलन का मुख्यालय था। इस आन्दोलन से जुड़े लोग किसी भी गैर–इस्लामी शासन के अधीन रहने के लिए तैयार नहीं थे। अतः अंग्रेजों को उनके प्रति आक्रोश था। 3 जुलाई को पटना में एक पुस्तक विक्रेता पीर अली के नेतृत्व में करीब 200 मुसलमान सड़क पर उतर आये और अंग्रेजों के खिलाफ गुस्से का प्रदर्शन किया। क्रुद्ध भीड़ ने शहर के एक गिरजाघर पर आक्रमण किया और अंग्रेज आर0 लायल की हत्या कर दी गयी। परिणामस्वरूप 43 लोगों को गिरफ्तार किया गया। परी अली समेत 16 लोगों को 4 जुलाई को पटना के गॉधी मैदान के बगल में फाँसी दे दी गई। पीर अली ने फाँसी पर चढ़ाये जाने के पूर्व अद्भुत धैर्य एवं साहस का परिचय दिया।

1857 की क्रांति में वीर कुंवर सिंह की प्रत्यक्ष एवं सक्रिय भागीदारी दानापुर के विद्रोही सैनिकों द्वारा 27 जुलाई को आरा शहर पर कब्जा करने के साथ ही शुरू हुई। इन सैनिकों ने न केवल उन्हें अपना नेतृत्व सौंपा बल्कि उन्हें महाराजा की उपाधि से भी विभूषित किया। एक बार विद्रोह का नेतृत्व सम्भाल लेने के बाद कुंवर सिंह ने फिर कभी मुड़कर पीछे नहीं

देखा। अपने विश्वस्त सहयोगी हरे कृष्ण सिंह के सहयोग से उन्होंने आरा में नागरिक प्रशासन स्थापित किया एवं विद्रोही सैनिकों का मनोबल ऊँचा उठाये रखा। आरा शहर से ब्रिटिश राज का खात्मा हो गया। कैप्टन डनबर के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना आरा पहुँची। लेकिन उसे बुरी तरह पराजित कर दिया गया। इस युद्ध में स्थानीय जनता ने भी कुंवर सिंह का साथ दिया। कैप्टन डनबर सहित कई अंग्रेज सैनिक मार डाले गये। कुंवर सिंह ने शेख गुलाम याहिया को आरा शहर का मजिस्ट्रेट नियुक्त किया एवं दीवार शेख अफजल के पुत्रों तुरावअली और खादिम अली को कोतवाल नियुक्त किया। शीघ्र ही कुंवर सिंह को मेजर विंग्सेंट आयर का सामना करना पड़ा। निश्चित रूप से आयर की सेना तोपों और बेहतर हथियारों से लैस थी। वीबीगंज नामक स्थान पर दोनों पक्षों में जंग हुआ और मेजर आयर 3 अगस्त को आरा शहर पर कब्जा करने में सफल हुआ। कुंवर सिंह आरा से जगदीशपुर चले गये। मेजर आयर ने जगदीशपुर की ओर प्रस्थान किया और काफी तहस नहस किया। कुंवर सिंह ने व्यक्तिगत शौर्य, संगठन क्षमता, अद्‌भुत नेतृत्व क्षमता एवं विशिष्ट छापामार युद्ध कला एवं अप्रतिम धैर्य का परिचय दिया। अपने जीवन के 75 वर्ष से ज्यादा की उम्र में वे 26 अगस्त को दानापुर एवं रामगढ़ के विद्रोही सैनिकों एवं अपने अनियमित सैनिकों एवं समर्थकों के साथ मीर्जापुर के नजदीक विजयगढ़ पहुँच गये। यहाँ से वे रीवाँ पहुॅचे जहॉ का राज उनका रिश्तेदार था। लेकिन राजा से उन्हें विशेष सहायता नहीं मिली। 1857 के सितम्बर के अन्तिम सप्ताह में वे बान्दा पहुॅचे जहॉ नवाब ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। अक्टूबर के अंत में वे बान्दा से कालपी पहुॅचे। कालपी में ही उनकी सहचरी धरमन बीबी एवं एकलौते पौत्र वीर भंजन सिंह की मृत्यु हो गयी। लेकिन वे

विचलित नहीं हुए। कालपी से वे कानपुर पहुॅचे। कालपी में ग्वालियर की विद्रोही सेना उनके साथ हो गयी थी। कानपुर से वे लखनऊ गये जहाँ बेगम हजरत महल ने उनका भरपूर स्वागत किया और आजमगढ़ का अधिकार पत्र सौंप दिया। जनवरी 1858 ई0 तक वे लखनऊ में रहे और प्रचुर संसाधन जुटाकर अपनी सेना को नये अस्त्र–शस्त्र से सुसज्जित किया। लखनऊ से फैजाबाद और वहाँ से अयोध्या पहुँचे। आजमगढ़ को अंग्रेजों के कब्जे से मुक्त कराने का फैसला किया। लेकिन रास्ते में अतरौलिया में अंग्रेजी सेना के कर्नल नीलमैन से उनका मुकाबला हुआ। वे विजयी रहे और 26 मार्च को उन्होंने आजमगढ़ को अपने कब्जे में किया। आजमगढ़ की जीत ने उनके सहयोगियों में नया उत्साह भर दिया। उन्होंने फिर शाहाबाद एवं जगदीशपुर को मुक्त कराने का संकल्प लिया। आजमगढ़ से वे गाजीपुर की तरह बढ़े। अंग्रेजों ने ब्रिगेडियर एडवर्ड लुगाई के नेतृत्व में सेना भेजी, लेकिन उससे विशेष सफलता नहीं मिली। ब्रिगेडियर डगलस को उनका रास्ता रोकने के लिए भेजा गया। उसे भी सफलता नहीं मिली। कुंवर सिंह ने अपनी नायाब छापामार शैली का परिचय देते हुए शिवपुर घाट पर गंगा नदी को पार किया और अपने गृह जनपद में प्रवेश किया। जिस समय वे नदी पार कर रहे थे डगलस की सेना वहाँ पहुॅची और तोपों के गोले वहॉ बरसने लगे। एक गोला कुंवर सिंह के नाव पर भी आ गिरा और उनका बॉया हाथ बुरी तरह चोट खा गया। उन्होंने अपने अप्रतिम साहस और धैर्य का परिचय देते हुए जख्मी हाथ को खुद ही काट कर अलग कर दिया और इसी स्थिति में जगदीशपुर पहुॅचे और गढ़ पर अधिकार जमा लिया। उनकी इस विजय से जगदीशपुर में 23 अप्रैल, 1858 को होली जैसा माहौल बन गया। उसी दिन कैप्टन ली ग्रांड के

नेतृत्व में एक सेना कुंवर सिंह से लड़ने को आरा से जगदीशपुर आयी। लेकिन उनके सामने टिक नहीं सकी। उल्लासपूर्ण माहौल के बीच में ही 26 अप्रैल, 1858 को उन्होंने अपनी ऑखें सदा के लिए मूँद ली। उनके निधन के बाद भी स्वातंत्र्य चेतना के मशाल को उनके भाई अमर सिंह और सहयोगी हरे कृष्ण सिंह ने अगले एक साल तक जलाये रखा। उन्होंने ने केवल अंग्रेजों से लोहा लिया बल्कि जगदीशपुर में एक क्रांतिकारी सरकार की स्थापना भी की।

उपयोगी पुस्तकें :–

1. के. के. दत्त, बिहार में स्वातंत्र्य संघर्ष का इतिहास
2. प्रमोदानन्द दास, कुमार अमरेन्द्र, बिहार इतिहास एवं संस्कृति